International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 01, January - March, 2021, pp.319-323

जैन स्थानांग सूत्र में मानुषी गर्भ विश्लेषण

डॉ. अलका जैन*

प्रस्तावना

जैन आगमों का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व सुनिश्चित है। प्राचीन जैन समुदाय के राजनैतिक, सामाजिक और भौगोलिक प्रबंधन के ज्ञान के लिए आगम ही एक मात्र आलंबन हैं। आगम भारत के जैन समुदाय का व्यापक चित्र प्रस्तुत करते हैं। आज की जैन समुदाय की श्रद्धा एवं संयम पूर्ण जीवन शैली इन्हीं आगमों की देन है। ये आगम जैनों के व्यवस्थित जीवन का आधार रही हुई सभी पद्धतियों का विवरण भी अपने में समेटे हुए हैं।

श्वेताम्बर जैन आगम संग्रह के बारह अंगों में स्थानांग सूत्र तीसरे स्थान का आगम है। 'स्थानांग' शब्द स्थान तथा अंग – इन दो शब्दों से मिल कर बना है।अंग का अर्थ है भेद तथा स्थान का अर्थ है–"जिसका स्वभाव व रूप प्रतिस्थापित किया जाये वह स्थान है (जिणदास गणि महत्तर)"। स्थानांग सूत्र में एक से दस तक की संख्या वाले भेद हैं जिनके ऐसे तत्वों यथा जीव, पुद्गल आदि का उल्लेख किया गया है। प्रस्तुत आगम में विषय को आधार न बना कर संख्या को आधार बनाया गया है अर्थात जिस वस्तु के जितने भेद हैं, उसे क्रमशरू उसी उद्देशक में सम्मिलित किया गया है।जीव, पुद्गल, इतिहास, खगोल, गणित, दर्शन, आचार–विचार, प्रबंधन, चिकित्सा, मानुषी गर्भ आदि सौ से अधिक विषयों का संकलन जिज्ञासुओं को स्थानांग सूत्र में प्राप्त होता है।

स्थानांग सूत्र को स्थानांग जी और ठाणं कह कर भी पुकारा जाता हैयह ग्रन्थ हमें चिकत्सा संबंधी अनेक क्षेत्रों की विस्तृत जानकारी प्रदान करता है। प्रस्तुत शोध में स्थानांग सूत्र में प्राप्त मानुषी गर्भ से सम्बंधित सभी सूत्रों का विश्लेषण पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। प्रथमतरू स्थानांग सूत्र के पांचवें अध्याय के दुसरे उद्देशक का तीसवां सूत्र प्रस्तुत हैरू

"पञ्चहिं ठाणेहिमित्थी पुरिसेण सद्धिं असंवमाणी वि गब्भं धरेज्जा, तंजहा– इत्थी दुव्वियडा दुन्निसणा सुक्कपोग्गले अहिट्ठिज्जा।सुक्कपोग्गल संसिट्ठे व से वत्थे अन्तो जोणीए अणुपवेसेज्जा। सइं वा सा सुक्कपोग्गले अणुपवेसेज्जा।परो व से सुक्कपोग्गले अणुपवेसेज्जा। सीओदग वियडेण वा से आयममाणीए सुक्कपोग्गले अणुपवेसेज्जा।इच्चेएहिं पञ्चहिं ठाणेहिं जाव धरेज्जा। पञ्चहिं ठाणेहिमित्थी पुरिसेण सद्धिं संवमाणी वि गब्भं नो धरेज्जा।तंजहा–अप्पत्तजोवणा, अइकंत जोवणा, जाइवंझा, गेलनपुट्ठा, दोमणसिया।इच्चेएहिं पञ्चहिं ठाणेहिं जाव नो धरेज्जा।पञ्चहिं ठाणेहिमित्थी पुरिसेण सद्धिं संवमाणी वि गब्भं नो धरेज्जा।तंजहा– निच्चोउया, अणोउया, वावन्नसोया, वाविद्धसोया, अणंगपडिसेवणी। इच्चेएहिं पञ्चहिं ठाणेहिमित्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणी वि गब्भं नो धरेज्जा।पञ्चहिं ठाणेहिमित्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणी वि गब्भं नो धरेज्जा, तंजहा– उउंमिणो णिगाम पडिसेवणी यावि भवइ, समागया वा से सुक्कपोग्गला पडिविद्धसंति, उदिन्ने वा से पित्तसोणिये , पूरा वा देवकम्मुणा, पटफले वा नो निद्दिट्ठे भवइ। इच्चेहिं जाव नो धरेज्जा।"

---

6 सीनियर रिसर्च फेलो, आई.सी.एस.एस.आर.।

अर्थ पांच कारणों से स्त्री पुरुष के साथ संगम न करती हुई भी गर्भधारण कर सकती हैः

- स्त्री नग्नावस्था में भद्दे ढंग से बैठी हुई हो तो वहाँ रहे हुए शुक्र पुद्गल उसकी योनी में प्रविष्ट हो जाएँ।
- शुक्रपुद्गल से सना हुआ वस्त्र योनी में चला जाये।
- वह स्वयं शुक्रपुद्गलों को योनी में प्रविष्ट कर ले।
- दूसरा कोई शुक्र पुद्गलों को योनि में प्रविष्ट करा दे।
- तालाब आदि में शीतल जल से आचमन या स्नान करती हुई योनी में शुक्रपुद्गल प्रविष्ट हो जाएँ।

इस भाँति उक्त पांच कारणों से स्त्री पुरुष के साथ सहवास न करती हुई भी गर्भधारण कर सकती है।

पांच कारणों से स्त्री पुरुष के साथ सहवास करती हुई भी गर्भ नहीं धारण कर सकती हैः

- अभी यौवन अवस्था को प्राप्त न हुई हो
- यौवन अवस्था बीत चुकी हो
- जन्म से वन्ध्या हो
- रोगग्रस्त हो
- सहवास के समय किसी कारण उसका मन खिन्न हो।

और पांच कारणों से स्त्री पुरुष के साथ सहवास करती हुई भी गर्भ धारण नहीं कर सकती है।

- नित्य ऋतु वाली हो
- कभी ऋतुमती न होती हो
- उसका गर्भाशय नष्ट हो गया हो
- उसके गर्भाशय की शक्ति क्षीण हो गयी हो
- असेवनीय अंग के द्वारा काम पूर्ती करती हो।

और पांच कारणों से स्त्री पुरुष के साथ सहवास करती हुई भी गर्भ धारण नहीं कर सकती हैः

- ऋतुकाल में पूर्ण रूप से काम का सेवन न करने वाली हो
- योनि में आये हुए शुक्र पुद्गल नष्ट हो जाते हों
- पित्त प्रधान शोणित का उद्रेक हो जाता हो
- पूर्वकृत देवी प्रकोप हो
- भाग्य से पुत्र प्राप्ति का फल न हो।

इस प्रकार इन पांच कारणों से पुरुष का सहवास करती हुई भी स्त्री गर्भ धारण नहीं कर सकती है।

विवेचनारू यहाँ पाठकों के सामने यह प्रश्न उपस्थित हो सकता है कि जब स्थानांग सूत्र एक धार्मिक ग्रन्थ है तो उसमें काम सम्बंधित विषयों का उल्लेख कैसे प्रासंगिक है। इसका समाधान आचार्य आत्माराम जी इन शब्दों में प्रस्तुत करते हैं, "इससे पूर्व के सूत्र में साधु के अंतरूपुर में प्रवेश के कारण बताये गए हैं , जिन कारणों से वह अंतरूपुर में प्रवेश करता हुआ भी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करता है। अंतरूपुर का सम्बन्ध स्त्रियों से है, वे स्त्रियाँ गर्भ धारण कर संतान उत्पन्न किया करती हैं। उनके गर्भ धारण का कारण पुरुष का सहवास होता है , परन्तु कभी कभी बिना सहवास के भी गर्भ धारण कर लेती हैं और कभी सहवास करके भी गर्भ धारण नही कर पातीं । कोई राज महिशीए जब अनेक कारणों से गर्भ नहीं धारण कर पाती तो वह अन्य पुरुष का संसर्ग चाहती है, उस अवस्था में वह अंतरूपुर में जाने वाले साधु को भी विचलित करने का प्रयास कर सकती है अतरू साधु का वहाँ जाना वर्जित है।अतएव साधु को सावधान करने की दृष्टि से यहाँ सूत्रकार स्त्री द्वारा गर्भ धारण कर सकने के और न कर सकने के कारण प्रदर्शित करते हैं।"

कभी कभी स्त्री पुरुष के साथ सहवास न करने पर भी गर्भ धारण कर लेती है। बिना पुरुष संयोग के गर्भ धारण कैसे हो सकता है? सबसे पहले उन्हीं कारणों का विवेचन सूत्रकार ने किया है।इन पांच कारणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि कुमारी कन्या और विधवा स्त्री को उपर्युक्त पांच कारणों से सदैव सावधान रहना चाहिए। इसके पश्चात् अन्य अलग अलग तरह के पांच –पांच करके बीस कारण बताये गए हैं जिनकी वजह से कोई विवाहिता पुरुष संयोग के बावजूद गर्भ नहीं धारण कर पाती अथवा कोई अन्य स्त्री पुरुष संयोग के बिना भी गर्भ धारण कर सकती है। निम्न आरेख में इनका विवेचन दिया गया हैः

आरेख 1: पुरुष सहवास तथा मानुषी गर्भ धारण

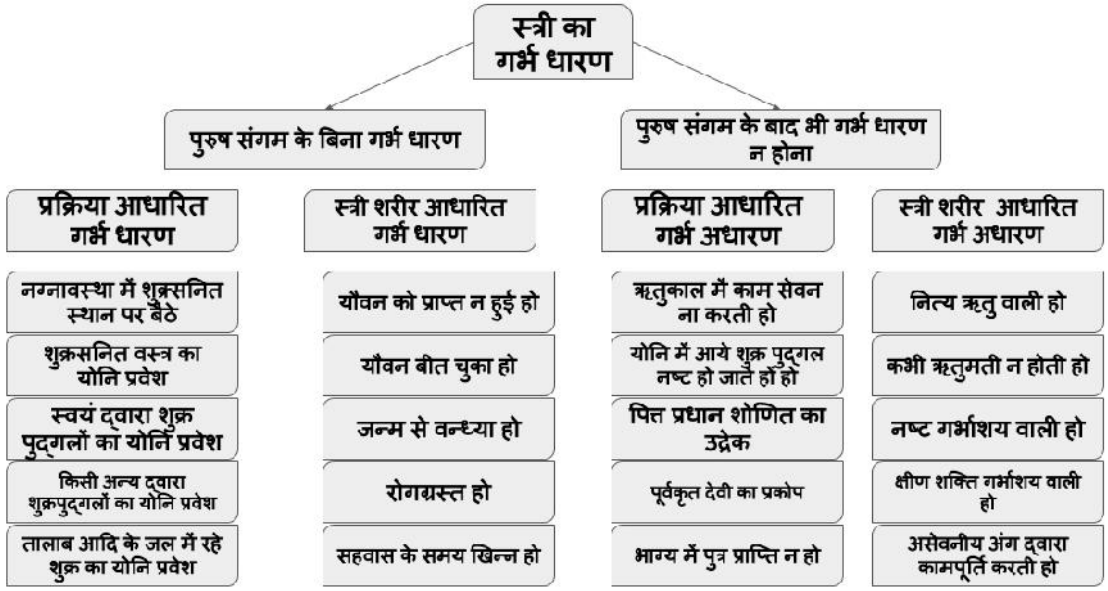

स्त्रोतः स्थानांग सूत्र आधारित शोध कर्त्री का विश्लेषण

प्रस्तुत सूत्र में सदाचार में प्रवृत्ति रखते हुए पुत्र फल की इच्छा करना सही कहा है।शास्त्र कार ने अति विषयी सेवन पुत्रफल के लिए अयोग्य सिद्ध किया है, स्वपति संतोष वाली स्त्री तथा स्वपत्नी संतोष वाले पुरुष के लिए ऐसे पाठ विशेष अनुमनन योग्य कहे गए हैं। अगले चरण में विवेचना प्रस्तुत है कि किस अवस्था में मानुषी गर्भ में पुरुष, स्त्री नपुंसक या बिंब की स्थापना हो जाती है। यह सूत्र स्थानांग सूत्र के चौथे अध्याय के चौथे उद्देशक का १६४ वां सूत्र है।

४/४/१६४ आचार्य आत्माराम जी

सूत्र चत्तारि माणुस्सीगब्भा पण्णत्ता, तंजहा– इत्थित्ताए, पुरिसत्ताए, णपुंसगताए, बिम्बत्ताइ

अप्पं सुक्कं बहुं ओयं, इत्थी तत्थ पजायइ।
अप्पं ओयं बहुं सुक्कं, पुरिसो तत्थ पजायइ।।
दोण्हंपि रत्तसुक्काणं, तुल्लभावे णपुंसओ।
इत्थीओयसमाओगे बिम्बं तत्थ पजायइ।।

अर्थ चार प्रकार के मानुषी गर्भ कथन किये गए हैं– स्त्रीरूप, पुरुष रूप, नपुंसक रूप, बिंबरूप।

जब पुरुष का शुक्र अल्प और स्त्री का रज अधिक होता है तब वहाँ स्त्री उत्पन्न होती है। जब स्त्री का रज अल्प और पुरुष का शुक्र अधिक हो तब वहाँ पुरुष उत्पन्न होता है।रज और शुक्र दोनों के समान होने पर नपुंसक पैदा होता है।स्त्री रज का स्त्री रज के साथ संयोग होने पर वहाँ बिंब अर्थात अवयव रहित मांस–पिण्ड रूप की ही उत्पत्ति होती है।

विवेचनारू गर्भ के प्रकरण में प्रस्तुत सूत्र में मानुषी गर्भ का वर्णन किया गया है।प्रथम तीन प्रकार के गर्भ – स्त्री, पुरुष एवं नपुंसक तो स्पष्टतरू शुक्र एवं रज की संख्या के योग के आधार पर दिए गए हैं। चौथे प्रकार का गर्भ विशेष समझने योग्य है जिसका वर्णन आयुर्वेद एवं अन्य ग्रंथों में भी प्राप्त होता है।यदि वात विकार के प्रयोग से रुधिर स्थिर हो जाये तो बिंब बन जाता है।क्योंकि इसके कारण नारी रज आस पास के नलिका संस्थान में रुक जाता है और वह रज पुनरू नए रज से सम्मिलित हो कर गर्भ का रूप धारण कर लेता है।वह गर्भ तो नहीं होता परन्तु गर्भ के समान आकार वाला होता है।अतरू इसे गर्भ ही कहा जाता है।आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार वायु के वश से शोणित गर्भ के आकार में अवस्थित हो जाता है , गर्भ जैसा आकार होने से उसे बिंब गर्भ कहा जाता है।यह विवेचना आचार्य आत्मा राम जी की टीका से उद्धृत है।

आधुनिक युग में प्रासंगिकतारू प्रस्तुत सूत्र से प्राचीन विद्वानों के बृहत् ज्ञान का पता चलता है। आध्यात्मिकता को समझने के साथ साथ उन्होंने आध्यात्मिकता की राह में रोड़ा बन सकने वाले सभी घटकों का भी भली भांति अध्ययन किया हुआ था। यहाँ एक आश्चर्य जनक चिकित्सिकीय खोज का वर्णन है जिसे आधुनिक मानव पश्चिमी डोक्टरों की देन मानते हैं। प्रस्तुत सूत्र में स्पष्ट लिखा है कि ऐसी विधा उपलब्ध थी जिसमें कोई दूसरा व्यक्ति स्त्री की योनी में पुरुष शुक्राणु प्रविष्ट करा सकता था। इसे ही आजकल प्टथ कहा जाता है। परन्तु एक और तकनीक का पता चलता है जो आज के मेडिकल एक्सपर्ट्स के लिए अभी तक संभव नहीं है। सूत्र में लिखा है कि स्त्री स्वयं भी किसी पुरुष के शुक्राणु अपनी योनी में प्रविष्ट करा सकती है। जिस सहजता से इसका उल्लेख किया गया है उससे परिलक्षित होता है कि यह एक आम प्रयोग की जाने वाली तकनीक रही होगी एवं सामान्य स्त्रियाँ भी इसके उपयोग की विधि जानती होंगी।।किन्तु आज के युग में यह तकनीक केवल उन डॉक्टरों के पास है जो इस विषय के एक्सपर्ट हैं, एक सामान्य स्त्री के द्वारा इस तकनीक को प्रयोग किये जाने का उदाहरण तो अभी सोच से परे की बात है।यहीं भूत वि॥ के प्रयोग की बात भी सामने आती है, देवीकृत प्रकोप की अवस्था में भी गर्भ धारण नहीं होता ऐसा कहा गया है, इस वि॥ का लुका–छिपा रूप आज भी कहीं कहीं दिखाई दे जाता है। कुच्छ संस्थाएं तो इन्हें वैज्ञानिक पद्धति मानते हुए इनके प्रैक्टिशनरस को प्रमाणपत्र भी प्रदान करती हैं। झाडा आदि देने वाले इसी वि॥ का प्रयोग करते हैं।

सूत्र ३/१/६६ सुधर्म

योनि के प्रकार

तिविहा जोणी पण्णत्ता, तंजहा– सीया, उसिणा, सीओसिणा। ...तिविहा जोणी पण्णत्ता, तंजहा– सचित्ता, अचित्ता, मीसिया।..तिविहा जोणी पण्णत्ता, तंजहा– संवुडा, वियडा, संवुडवियडा।...तिविहा जोणी पण्णत्ता, तंजहा– कुम्मुन्नया, संखावत्ता, वंसीपत्ता।

अर्थात तीन प्रकार की योनियाँ वर्णन की गयी हैं– शीत, उष्ण और शीतोष्ण।...तीन प्रकार की योनियाँ वर्णन की गयी हैं– सचित्त, अचित्त और मिश्रित योनी।....तीन प्रकार की अन्य योनियाँ भी कही गयी हैं– संवृत्त, विवृत्त और संवृत्त–विवृत्त।.. तीन प्रकार की योनियाँ और कथन की गयी हैं– कूर्मोन्नत, शंखावर्त्त और वान्शीपत्रिका।

विवेचना प्रस्तुत सूत्र में विविध प्रकार की योनियों का वर्णन किया गया है। जिस स्थान पर मनुष्य नया शरीर धारण करता है उसे योनि कहा जाता है। सूत्रकार ने जीव के उत्पत्ति स्थान अनेक कोणों से विश्लेषण किया है, प्रस्तुत शोध के सन्दर्भ में हम मानुषी योनियों की ही चर्चा करेंगे। मनुष्यों की योनि संवृत्त–विवृत्त प्रकार की होती है जिसमें बच्चा कुछ दिन तक प्रच्छन्न रहता है किन्तु उसके संसार में आने का ज्ञान हो जाता है और समय आने पर वे जेर में लिपटे हुए प्रकट होते हैं।

मानुषी योनी के तीन विशेष प्रकार कहे गये हैं जो मानुषी के अंग की बनावट पर आधारित हैं, इनमें भी सामान्य मनुष्य जहां से जन्म लेता है वह योनि वान्शीपत्रिका होती है।वंश का रक्षण करने वाले जीवों की रक्षा करने वाली योनि ही वंशपत्रिका है, क्योंकि सभी सामान्य जीव अपने उत्पादकों की रक्षा करते ही हैं।

सूत्र ३/४/११४

संतान माता एवं पिता से कौन सा अंग धारण करती है?

तओ पिइयंगा पण्णत्ता, तंजहा– अट्ठी, अट्ठिमिंजा, केसमंसुरोमनहे। त'ओ माउयंगा पण्णत्ता, तंजहा–मंसे, सोणिए, मत्थुलिंगे।

तीन पितृ अंग कथन किये गए हैं– अस्थि, अस्थि मज्जा, केश, बाल, रोम और नख। तीन मातृ अंग कथन किये गए हैं– मांस, शोणित और मेधा फुफ्फुस्स फेफड़े, कपाल के अनातार्वार्ती दिमाग आदि।

विवेचना टीकाकार आचार्य आत्माराम जी लिखते हैं, "मैथुन क्रीडा के पश्चात् एकत्रित होने वाले शुक्र और आर्तव का जो परस्पर योग होता है वही योग शरीर निष्पत्ति का मूल कारण माना जाता है।....शरीर में जो अंग स्पर्श में कठोर, रंग में काले या सफ़ेद हैं वे सब पिता के अंश हैं किन्तु जो अवयव स्पर्श में कोमल स्निग्ध, रंग में लाल और कुछ श्वेत हैं, वे सब माता के अंश है।"

सूत्र ८/१/२६ में हमें क्षार तंत्र का विवरण प्राप्त होता है । इस शास्त्र में वीर्यवृद्धि के उपाय बतलाये गए हैं। वीर्य के क्षरण को क्षार कहते हैं।सुश्रुत आदि ग्रन्थों में इसे बाजीकरण तंत्र कहा जाता है।जो पुरुष हो कर नामर्द या नपुंसक हो जाते हैं उनका उपचार जैन युग में इसी तंत्र के आधार पर किया जाता था।

निष्कर्ष

यह पत्र वस्तुतरू शोध न हो कर प्राचीन मनीषियों द्वारा ळलंदमबवसवहल में प्रयोग में लाई जाने वाली वैज्ञानिक तकनीकों का संग्रहण है जिससे हमें पता चलता है कि इस विषय पर उनका ज्ञान आज की मेडिकल साइंस से भी कहीं ज्यादा गहन और विस्तृत था। आज के युग में प्राकृत समझ कर इन ग्रंथों को पढने वाले लोग बहुत ही कम रह गए हैं और जो हैं भी वो संयमित और मर्यादित जीवन शैली को अपनाये हुए हैं। मुख्यतरू यह ज्ञान जैन साधू समाज के पास है जो इसकी अध्यात्मिक व्याख्या तो बहुत ही शुद्ध रूप से करके मनुष्यों को वैराग्य के मार्ग पर ला सकते हैं । किन्तु इसमें रहे हुए वैज्ञानिक तत्वों की वैज्ञानिक विवेचना लगभग नगण्य ही प्राप्त होती है। आज आवश्यकता है प्राचीन भारतीय ज्ञान को दुबारा खंगालने की जिसमें ऐसी विलक्षण चिकित्सा पद्धतियों का उल्लेख है। संभवतरू हमें एडवांस्ड तकनीकों से सम्बंधित ज्ञान भी इन्हीं ग्रंथों में मिल जाये। परन्तु इसके लिए आवश्यकता है धर्म आदि का चोला उतार कर एक भारतीय हो कर सभी धर्म ग्रंथों को खंगालने की और उनसे ऐसी लुप्त चिकित्सा पद्धतियों की एक सम्पूर्ण तस्वीर तैयार करने की। यह पत्र निमंत्रण है उन सभी शोध कर्त्ताओं को जो इस क्षेत्र में अपना योगदान देना चाहते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

~ मधुकर मुनि, 'स्थानांग सूत्र' श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, २०१३।

~ आचार्य तुलसी, 'ठाणं' जैन विश्व भारती, लाडनूं, राजस्थान, वि. सं. २०३३।

~ आचार्य आत्मा राम जी महाराज (व्याख्याकार), 'स्थानांग–सूत्र' भाग दृ १ एवं भाग २, आचार्य श्री आत्माराम जैन प्रकाशन समिति, लुधिआना वि. सं.२०३२।

~ घेवर चंद जी बांठिया, 'स्थानांग सूत्र', भाग एक एवं भाग २, वि॥ बाल मंडली सोसाइटी, मेरठ,२००८.

❖◆❖